दिलीप चिंचालकर

कॉपी करो लेकिन ओरिजिनल की

बच्चे गोले में बैठकर एक खेल खेलते हैं। एक बच्चा दूसरे के कान में कुछ कहता है। वही बात दूसरा तीसरे के कान में दोहराता है। तीसरा चौथे के और चौथा पाँचवे के। इस तरह बात घूमते-घामते फिर पहले बच्चे तक लौट आती है। लेकिन यहाँ तक आते-आते वह कुछ की कुछ हो जाती है।

खेल में तो इस पर हँसी आती है, परन्तु ऐसा जब चित्रों के साथ होता है तब हँसी गायब हो जाती है। जिन बच्चों को जीव विज्ञान की पुस्तक देखकर चित्र बनाने पड़ते हैं वे इस बात को जानते हैं। पुस्तक की और असली फूल-पत्तियों में कई बार फर्क होता है। पहले फोटोग्राफर फूल की तस्वीर खींचता है फिर चित्रकार उसे देखकर चित्र बनाता है। कभी-कभी उस चित्र को देखकर एक तीसरा व्यक्ति चित्र बनाता है जो हमें किताबों में देखने को मिलता है। यानी चित्र फर्स्ट हैण्ड नहीं थर्ड-फोर्थ हैण्ड होता है। असली फूल को देखकर बना चित्र अच्छा तो दिखता ही है, उसकी बनावट भी बेहतर ढंग से समझ में आती है।

अच्छे कलाकार प्रकृति में देखी चीज़ों को दिमाग में रखकर उनका उपयोग अपनी कृतियों में करते हैं। एक अच्छा फैशन डिज़ाइनर आकाश के रंगों को या पत्तों के रंगों की छटा (कलर स्कीम) को अपने कपड़ों में उतारकर वाहवाही लूटता है। राइट बन्धुओं ने भी तो पंछियों के डैनों की वैज्ञानिक ढंग से नकल अपने हवाई जहाज़ के पंखों में की।

स्केच-बुक और पेंसिल से दोस्ती गाँठो। दीपिका पादुकोण या सोनम कपूर का फोटोग्राफ देखकर चित्र बनाने की बजाय अपने दोस्त को सामने बैठाकर उसका चित्र बनाओ। या फिर दादा-दादी, नाना-नानी को अपना मॉडल बनाओ। कप-प्लेट, गुलदान, कम्पास-किताबों के भी चित्र बना सकते हो। लोगों के चित्रों को पोरट्रेचर कहते हैं और निर्जीव वस्तुओं के चित्रांकन को स्टिल लाइफ।

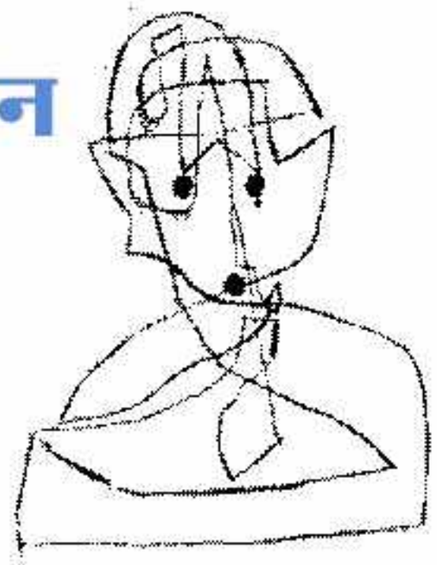

द फायर (1933) - मातिसी

शेन लीथवेट द्वारा बनाया मेरा चित्र

यहाँ दो चेहरे बने हुए हैं। एक मातिसी का बनाया और दूसरा शेन लीथवेट का। मातिसी एक प्रख्यात चित्रकार हैं और शेन लीथवेट ग्यारह साल का बच्चा। चलती बस में शेन ने मेरा यह दाढ़ीवाला चित्र बनाया था।

दूसरे दो चित्रों में बने कमरे काफी कुछ तुम्हारे बनाए जैसे हो सकते हैं – जमावट में भी और चित्र बनाने की शैली में भी। ये जाने-माने चित्रकार वान गॉग के बनाए हैं। मेज़ पर रखी शीशियों और मर्तबान का चित्र भी उन्हीं का है। आधी खुली

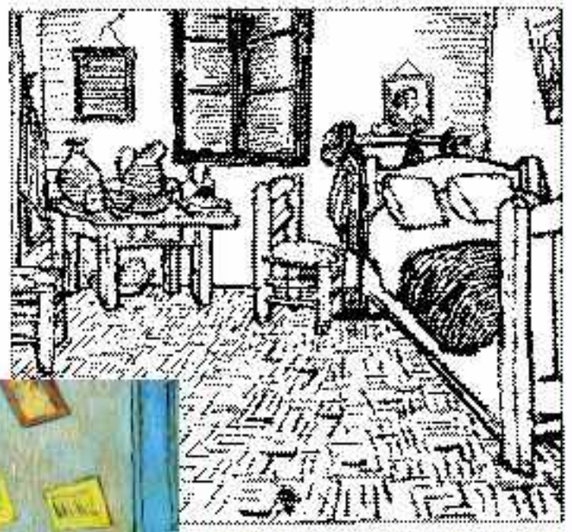

वान गॉग

चित्र: मातिसी

खिड़की वाला चित्र मातिसी का है। जीते-जागते मॉडल और असली चीज़ों के चित्र बनाकर तुम यह भी जान पाओगे कि होठों के आकार कैसे होते हैं? नाक और कान चेहरे पर कितने ऊपर-नीचे हैं या फिर आँखों और भौहों में क्या सम्बन्ध होता है? वस्तुएँ आगे-पीछे रखने पर कितनी छोटी-बड़ी दिखती हैं?

क्या यह मुश्किल है? कोशिश करो तो क्या ऐसे चित्र तुम नहीं बना सकते? बना सकते हो! किसी ने कहा है कि मन से चाहो तो सारी कायनात उसे पूरा करने में जुट जाती है।